International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 14 Issue 3, May-June, 2026

प्रवासी हिंदी कवयित्री अमरजीत कौर की कविताओं में निहित 'बिंब-विधान'

डॉ. सुमन देवी

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, दूबलधन, झज्जर

शोध सारांश -

हिंदी काव्यशास्त्र में 'बिंब' (Image) एक महत्वपूर्ण काव्य-तत्व है, जो अनुभूति को दृश्यात्मक, संवेदनात्मक और प्रतीकात्मक रूप में पाठक के सामने प्रस्तुत करता है। बिंब शब्दों द्वारा निर्मित चित्र होते हैं, जिनका आविर्भाव कल्पना से होता है। बिंब कल्पना का मूर्त रूप है। एक कवि बिंब द्वारा अमूर्त संवेदना को भी मूर्त रूप में चित्रित कर देता है। प्रवासी साहित्य में बिंबों की भूमिका और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वहाँ स्मृति, विस्थापन और सांस्कृतिक द्वंद्व को व्यक्त करने का मुख्य माध्यम बिंब ही होता है। प्रवासी हिंदी कवयित्री **अमरजीत कौर** की कविताओं में 'मातृभूमि' एक सशक्त और बहुआयामी बिंब के रूप में उभरती है। विमलेश कांति वर्मा द्वारा संपादित पुस्तक 'फिजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य' में संकलित उनकी कविताएँ – दूभर संताप, हियांगन, नमन, प्रवासी भारती, सुन मुन्ना के बापूआ, ओ रसिया, किन्तु जाए राधा, महामणि, गिरमिट आदि – मातृभूमि को केवल भौगोलिक स्थल के रूप में नहीं, बल्कि स्मृति, संस्कृति, भाषा और संवेदना के रूप में चित्रित करती हैं। कवयित्री अपनी सृजनात्मक कल्पना के माध्यम से अपने भीतर स्थित वस्तुओं, घटनाओं आदि का पुनर्निर्माण करती है। इस प्रकार बिंब विधान का प्रथम चरण संवेदना का संस्कार रूप में रूपांतरण करना है।

बीज शब्द: बिंब, प्रवासी साहित्य, मातृभूमि, स्मृति, अस्मिता, पुनर्निर्माण, रूपांतरण

आमुख-

प्रवासी साहित्य आधुनिक हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण धारा है, जिसमें देश-विदेश में बसे भारतीय रचनाकारों की अनुभूतियाँ अभिव्यक्त होती हैं। प्रवास का अनुभव केवल भौगोलिक दूरी का अनुभव नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, भाषाई और भावनात्मक दूरी का भी अनुभव है। ऐसे में 'मातृभूमि' की स्मृति कवि-मन में एक स्थायी भाव के रूप में उपस्थित रहती है। भारतीयों की यह साहित्यिक अभिव्यक्तियां उनके जीवन संघर्ष उनकी मान- मर्यादाओं, विचारों और भावों को तो अभिव्यक्त करती ही हैं ,भारत तथा भारतीयता के प्रति उनके स्नेह और सम्मान को भी व्यक्त करती हैं ।

अमरजीत कौर की कविताएँ इसी प्रवासी चेतना की प्रतिनिधि हैं। उनकी कविताओं में मातृभूमि एक जीवंत बिंब के रूप में उपस्थित है–कभी माँ के रूप में, कभी मिट्टी की गंध के रूप में, तो कभी लोक-संस्कृति के रूप में।

बिंब का अर्थ, स्वरूप और वर्गीकरण -
'बिंब' शब्द संस्कृत धातु 'बिम्ब' से बना है, जिसका अर्थ है–प्रतिबिंब, छवि या प्रतिरूप। काव्यशास्त्र में बिंब वह दृश्य या मानसिक चित्र है, जो कवि की अनुभूति को मूर्त रूप देता है।

आधुनिक हिंदी आलोचना में बिंब को अनुभूति की मूर्त अभिव्यक्ति माना गया है। "प्रस्तुत परिवेश के संवेदना और प्रत्यक्ष के अतिरिक्त उनके मानस में अतीत की तथा कभी अस्तित्व में रहने, न घटने वाली वस्तुओं और घटनाओं की असंख्य प्रतिमाएं भी रहती हैं , बिंब शब्द इसी मानस प्रतिमा का पर्याय है।"1 बिंब के माध्यम से कवि अमूर्त भावों को भी दृश्यात्मक बना देता है। बिंब का वास्तविक आधार बाहर रहता है तथा मानसिक आधार कवि के भीतर। अंत में बने इन चित्रों को एक कवि भाषा के माध्यम से शब्द चित्रों के रूप में कागज पर उकेर देता है, ये शब्द चित्र सहृदय पाठक के मन पर भी उतना ही प्रभाव डालते हैं जितना की एक लेखक के अंतस ने अनुभव किए हैं।

बिंब के वर्गीकरण के संदर्भ में डॉ. नगेंद्र के विचार विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने बिंब को विभिन्न आधारों एवं दृष्टियों से वर्गीकृत किया है, उनके अनुसार बिंब का सर्वप्रमुख आधार इंद्रियता है, जिसके अनुसार बिंब को पांच भागों में बांटा गया है दृश्य, श्रव्य, स्पर्श, घ्रात्वय एवं आस्वाद्य ।

बिंब की रचना प्रक्रिया में ऐंन्दिय बोध का विशेष योगदान रहा है। मनुष्य के भाव जगत का संबंध ऐंन्दिय बोध से है। कवि जिन संदर्भों को देखता है, जिन ध्वनियों को सुनता है, जिन गंधों को सूंघता है, जिन वस्तुओं को स्पर्श करता है, जिन रसों का आस्वाद करता है, उन्हीं से उसकी मानसिकता तथा अनुभूतियों की रचना होती है । अमरजीत कौर के काव्य में इस प्रकार के विभिन्न बिंब विधानों का उत्कर्ष देखते ही बनता है, इसके अतिरिक्त उनकी काव्य भाषा में ऐन्दिय बिंबों से अलग ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक भाव बिंब आदि मानव मन की अंतर्निहित अनुभूतियों को दर्शाते हैं । उन्होंने अपनी सहज, सरल, अप्रतिम प्रतिभा एवं कोमल कल्पना के बल पर ऐसे अनेक बिंबो का सृजन किया है। उनकी काव्य भाषा में आए ऐसे बिंब विधानों का अध्ययन निम्न बिंदुओं के आधार पर किया जा सकता है।

मातृभूमि का बिंब -

प्रवासी साहित्य में मातृभूमि एक स्थायी भाव के रूप में उपस्थित रहती है। यह मातृभूमि केवल जन्मभूमि नहीं, बल्कि पहचान और अस्तित्व का आधार है। प्रवासी कवि जब विदेशी धरती पर रहता है, तब उसकी स्मृतियों में मातृभूमि एक आदर्श, एक सांस्कृतिक आश्रय और एक आत्मीय स्थल के रूप में उभरती है।इन्होंने अपनी भाषा और संस्कृति को सुरक्षित रखा है और उसके विकास तथा सम्मान के लिए निरंतर सचेष्ट भी हैं। अमरजीत कौर अपनी कविता 'प्रवासी भारती' में लिखती हैं-

"हम प्रवासी भारती,
जब छोड़े अपना देश!
गुलाम बने थे गौरव के,
तब भारत और विदेश।
मातृभूमि से बिछड़ कर,
मन में हुआ क्लेश।
परिवारी जन छूट गए,
मिले न कोई संदेश।"2

अमरजीत कौर की कविताओं में मातृभूमि का बिंब स्मृति, पीड़ा और गर्व–तीनों स्तरों पर अभिव्यक्त होता है।

उनकी कविताओं में मातृभूमि का सबसे प्रमुख बिंब 'माँ' का है। नमन, प्रवासी भारती,हियांगन जैसी कविताओं में भारतभूमि को एक करुणामयी, वात्सल्यपूर्ण माँ के रूप में चित्रित किया गया है।

"वही चमकता महकता
घर- द्वार आनंदित संसार
तथा ममता से परिपूर्ण
हियांगन
सूनी त्रस्ति अमावस्या की
काली रात की भांति
खिन्न व कुंठित
हो जाता है।"3

यह बिंब प्रवासी मन की उस मनःस्थिति को दर्शाता है, जहाँ वह अपनी जन्मभूमि को स्मृतियों में संजोए रहता है। माँ का बिंब सुरक्षा, स्नेह और आत्मीयता का प्रतीक है।

सांस्कृतिक बिंब-

'हियांगन' और 'दूभर संताप' 'गिरमिट' जैसी कविताओं में मिट्टी की गंध, खेत-खलिहान, आँगन और तुलसी पौधे जैसे बिंब उभरते हैं। ये बिंब घ्राण और दृश्य दोनों स्तरों पर संस्कृति को जीवंत कर देते हैं।

"न हमारा कोई भैया भाभी
न हमारी कोई बिटिया
न जर- जोरू न कोई बहना
न भेजे कोई चिट्टियां
फिजी में जब आए के देखा
जीवन हो गया मोहरा
गिर कर भी जो मिटे न लोगों
उसे कहते हैं गिरमिटिया"4

विदेशी भूमि पर रहते हुए कवयित्री को अपनी मातृभूमि की मिट्टी की सोंधी गंध स्मृति में बार-बार लौटाती है। यह गंध केवल भौतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति का प्रतीक है।

'ओ रसिया' और 'किन्तु जाए राधा' जैसी कविताओं में भारतीय लोक-संस्कृति, लोक-गीत और धार्मिक-सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से उत्कृष्ट बिंब उभरता है।

"बलमा हमार छीना यमुना क तट पर,
किंतु ओर जाये मरे 'राधा' अब पापिया।
चहूं ओर चहूं घरी घेरे रहे 'कौरवन'।
'कंस' की औलाद तू, न जाने सब पपियां"5

राधा-कृष्ण के प्रसंग, लोक-रीति और त्योहार–ये सभी मातृभूमि के सांस्कृतिक पक्ष को उजागर करते हैं। यहाँ मातृभूमि केवल भूभाग नहीं, बल्कि एक जीवित सांस्कृतिक परंपरा है।

ऐतिहासिक, पौराणिक बिंब-

'गिरमिट' कविता में प्रवासी इतिहास की पीड़ा का चित्रण है। यहाँ बिंब ऐतिहासिक स्मृति से जुड़ता है। गिरमिटिया मजदूरों की व्यथा के माध्यम से मातृभूमि की दूरी और उसके प्रति तड़प को अभिव्यक्त किया गया है। ऐतिहासिक स्मृतियां पुरातन समाज का आलेख है। मानव समाज इतिहास और पुराणों से प्रेरणा लेता है। इन्हीं इतिहास एवं पुराणों को जब कवि बिंब रूप में ग्रहण करता है तो यह ऐतिहासिक पौराणिक बिंब कहलाते हैं। अमरजीत कौर की कविता 'किंतु जाय राधा' के अनेक प्रसंग इस प्रकार के मिलते हैं, जिनमें इस प्रकार के बिंबों की उत्पत्ति हुई है।

"कृष्ण सुदामा कहूं कभी कोई दुख बांटे,
मुड़आ पे छा जाये काल गिरमिटिया।
कर्म कमाय, दुःख उठाये के,
भारत के मिटे देखो लाल गिरमिटिया।"6

यह बिंब मातृभूमि को एक खोई हुई धरोहर के रूप में प्रस्तुत करता है।

सामाजिक, राजनीतिक बिंब-

प्रवासी साहित्य में वहां के समाज के अनेक सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों का भी उद्घाटन हुआ है। राजनीति के घिनौने चेहरे को लेखिका ने विंबित किया है। नेताओं के शब्द चित्र में वर्तमान राजनीति के स्वरूप को देखा जा सकता है। यहां राजनीति के उस स्वरूप को बिंम्बित किया गया है जिसमें नेता अपने हित के लिए ही कार्य करते हैं और संवेदनशील होने का अभिनय भी करते हैं। यह राजनीति का घिनौना चेहरा ही है जो भारतीय मजदूर प्रवास में गिरमिट बनाकर भेज दिए गए और उनकी आज ऐसी दयनीय स्थिति है जो पाठक की संवेदना के स्तर को स्पर्श करती है । अपने पूर्वजों की ऐसी दीन-हीन स्थिति को उजागर करते हुए कवयित्री लिखती है,

"आओ पूर्वजों को हम नमन करें,
वे साहसी और सिर दानी थे।
कुली प्रथा के कुली नहीं वे,
शहीदों जैसे बलिदानी थे।"7

मनोवैज्ञानिक बिंब –

मनोवैज्ञानिक बिंब मानव मन की उलझनों को प्रत्यक्ष रूप में उजागर करते हैं ।यह पूर्णतः मानसिक प्रक्रिया है, जिसका आधार कल्पना है। मनोवैज्ञानिक बिंब केवल मन से संबंधित होते हैं। इनमें सृजनात्मक का अभाव देखा जाता है, इसलिए ये बिंब प्रायः निर्जीव से लगते हैं। अमरजीत कौर के काव्य में मानसिक उलझन के सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक बिंब देखे जा सकते हैं। उनकी कविता 'दूबर संताप' में ऐसे उदाहरण अवलोकनीय हैं।

"यह कैसा जमाना आ रहा है!
रिश्तो की मान- मर्यादा, लज्जा,
दया और हया का पतन!!"8

महामानी कविता में अपने मन की पीड़ा को व्यक्त करते हुए कवयित्री लिखती हैं–

"तुम वापस ले लो
मुझे उधर दी हुई
दिखावटी सुख सुविधाएं....
.... लौटा दो मुझे
मेरी मानसिक खुशी
संतोष और सहिष्णुता "9

इन पंक्तियों में कवयित्री ने मन के विकृत पक्ष को बिम्बित किया है। उन्होंने मनोवैज्ञानिक बिंबो के प्रयोग से अपनी कविताओं को उत्कृष्टता के शिखर पर पहुंचाया है।

प्रकृतिपरक बिंब–

प्रकृति का स्वरूप इतना विशाल और व्यापक है कि कवि मन को अपनी तरफ आकर्षित कर ही लेता है। साहित्य में प्रकृति के बिंब नाना रूपों में चित्रित होते हैं। सूर्य, चंद्रमा, तारें, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, खेत, पहाड़, नदी, झरने, चांदनी रात, शीतल हवा आदि प्रकृति के विविध उपमानों को काव्य में बिंबित करना ही प्रकृतिपरक बिंब कहलाते हैं।

"स्वर्णिम संसार

निर्मल प्यार और
निखिल सुख सौरभ
तभी आनंदमय तथा
शीतल सुखदायक
होता है
जब
पूनम की तरह
चांद और सितारे
ग्रह स्वामी तथा बच्चे
ममता के आंगन में
निर्मल प्यार की
ठंडी चांदनी
बिखर करते हैं"10

अमरजीत कौर के काव्य में प्रकृतिपरक बिंब अनेक स्थानों पर देखे जा सकते हैं। उन्होंने प्रकृति के विविध उपादानों को विंबित कर अपनी काव्य भाषा को सहज व सरल बनाया है।

निष्कर्ष

बिंब काव्य की आत्मा है, जो अनुभूति को मूर्त रूप देता है। प्रवासी हिंदी कवयित्री अमरजीत कौर की कविताओं में 'मातृभूमि' एक सशक्त और बहुआयामी बिंब के रूप में उपस्थित है। माँ, मिट्टी, लोक-संस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक,पौराणिक, मनोवैज्ञानिक, प्रकृतिपरक आदि के माध्यम से बिंब आकार लेते हैं। उनकी कविताएँ यह सिद्ध करती हैं कि प्रवासी मन भले ही भौगोलिक रूप से दूर हो, परंतु उसकी आत्मा मातृभूमि के साथ गहराई से जुड़ी रहती हैं। इस प्रकार अमरजीत कौर की कविताओं में मातृभूमि का बिंब केवल स्मृति नहीं, बल्कि अस्मिता और सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है।

संदर्भ सूची-

1. डॉ. भोलानाथ तिवारी, शैलीविज्ञान, पृ. 107
2. विमलेश कांति वर्मा, फिजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, पृ. 62
3. वही पृ. 60
4. वही पृ. 68
5. वही पृ. 66
6. वही पृ. 66
7. वही पृ. 61
8. वही पृ. 57
9. वही पृ. 66
10. वही पृ. 60